



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषि मित्र और कृषि सेवाएं: नवाचार का नया युग

डॉ. पुष्पलता डावर¹, श्रेया सोनेश्वर², *डॉ. द्वारका³, निशा चट्टार⁴ एवं मनीषा⁵

¹पीएचडी शोधार्थी, कीटविज्ञान विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर,

मध्य प्रदेश-482004, भारत

²पीएचडी शोधार्थी, कीटविज्ञान विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड

टेक्नॉलजी, मेरठ, उ.प्र.-250110, भारत

³अतिथि विद्वान, कीटशास्त्र विभाग, कृषि विज्ञान अध्ययनशाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय,

उज्जैन, मध्य प्रदेश- 456010, भारत

⁴एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट

महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश- 472001, भारत

⁵पीएचडी शोधार्थी, कीटविज्ञान विभाग, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय,

ग्वालियर-474002, मध्य प्रदेश, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: dwarkanprasadjnkvv@gmail.com

कृषि मित्र ग्रामीण स्तर पर कृषि परिवर्तन के अग्रदूत हैं जो किसानों तक वैज्ञानिक जानकारी, सरकारी लाभ और तकनीकी सहायता पहुंचाते हैं। वहीं, कृषि सेवाओं का डिजिटलीकरण और यंत्रीकरण किसानों के लिए लाभकारी, सुलभ और समयबद्ध सहायता सुनिश्चित कर रहा है। दोनों मिलकर कृषि क्षेत्र को नवाचार के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं।

भूमिका

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में छोटे और सीमांत किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन की अत्यंत आवश्यकता होती है। यहीं से शुरु होती है कृषि मित्र की भूमिका— जो किसान समुदाय के भीतर से चयनित होकर वैज्ञानिक खेती और सरकारी योजनाओं की जानकारी गाँव-गाँव तक पहुंचाते हैं। इसी तरह, आधुनिक कृषि सेवाएं जैसे मोबाइल आधारित सूचना, कृषि मशीनरी बैंक, कस्टम हायरिंग सेंटर, और ई-नाम प्लेटफॉर्म किसानों को डिजिटल और तकनीकी रूप से सशक्त बना रही हैं। यह सब मिलकर आज कृषि के नवाचार के नए युग की शुरुआत का संकेत दे रहे हैं।

कृषि मित्र— गाँव का वैज्ञानिक दूत

कृषि मित्र ग्रामीण कृषि विकास की ऐसी महत्वपूर्ण कड़ी है, जो वैज्ञानिक अनुसंधान, आधुनिक कृषि तकनीकों और किसानों के व्यावहारिक अनुभवों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करते हुए गाँव-गाँव तक कृषि ज्ञान एवं नवाचारों का प्रसार करता है। बदलते कृषि परिदृश्य में कृषि मित्र की भूमिका केवल किसानों को सलाह देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक वैज्ञानिक दूत, तकनीकी मार्गदर्शक, समस्या समाधानकर्ता, नवाचार प्रसारक तथा ग्रामीण उद्यमिता के प्रोत्साहक के रूप में कार्य करता है। वह कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, अनुसंधान संस्थानों, कृषि विभागों और अन्य तकनीकी संगठनों द्वारा विकसित नवीनतम कृषि तकनीकों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप किसानों तक पहुँचाने में सेतु का कार्य करता है। मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, संतुलित उर्वरक उपयोग, उन्नत एवं प्रमाणित बीजों का चयन, फसल विविधीकरण, फसल चक्र, जल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई, एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन, जैविक एवं प्राकृतिक कृषि पद्धतियों, कृषि यंत्रीकरण तथा जलवायु-स्मार्ट कृषि तकनीकों के संबंध में किसानों को वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करना उसके प्रमुख कार्यों में शामिल है। कृषि मित्र खेतों का नियमित निरीक्षण करके फसलों में पोषक तत्वों की कमी, कीटों एवं रोगों के प्रारंभिक लक्षणों, खरपतवारों के प्रकोप तथा अन्य उत्पादन संबंधी समस्याओं की पहचान करने में किसानों की सहायता कर सकता है और आवश्यकतानुसार उन्हें विशेषज्ञों, मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं तथा कृषि विज्ञान केंद्रों से जोड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, मौसम पूर्वानुमान, समयानुकूल कृषि कार्यों, बाजार भाव, कृषि बीमा, किसान क्रेडिट कार्ड, सरकारी कृषि योजनाओं तथा डिजिटल कृषि सेवाओं की जानकारी उपलब्ध कराकर वह किसानों की निर्णय लेने की

क्षमता को मजबूत बनाता है। डिजिटल युग में कृषि मित्र मोबाइल एप्लिकेशन, व्हाट्सएप समूहों, ऑनलाइन कृषि परामर्श, डिजिटल मौसम सेवाओं, ड्रोन आधारित कृषि तकनीकों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित सूचना प्रणालियों का उपयोग करके किसानों तक त्वरित एवं उपयोगी जानकारी पहुँचा सकता है। वह खेत प्रदर्शन, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, किसान प्रशिक्षण, कृषक गोष्ठियों, किसान-वैज्ञानिक संवाद तथा प्रक्षेत्र भ्रमण के माध्यम से नई तकनीकों के प्रति किसानों का विश्वास बढ़ाने और उनके वैज्ञानिक अंगीकरण को प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों, महिला किसानों, ग्रामीण युवाओं तथा संसाधन-वंचित कृषक परिवारों तक कृषि सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने में कृषि मित्र की भूमिका अत्यंत उपयोगी है। महिला स्वयं सहायता समूहों, किसान उत्पादक संगठनों, सहकारी समितियों और युवा कृषि उद्यमियों के साथ समन्वय स्थापित करके वह सामूहिक विपणन, कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन, भंडारण, प्रसंस्करण तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन की संभावनाओं को भी बढ़ावा दे सकता है। कृषि मित्र का एक महत्वपूर्ण दायित्व किसानों में अंधविश्वासों, अप्रमाणित कृषि सलाहों तथा रासायनिक निवेशों के अनावश्यक उपयोग के प्रति जागरूकता विकसित करना और वैज्ञानिक प्रमाणों पर आधारित निर्णयों को प्रोत्साहित करना है। कीटनाशकों एवं अन्य कृषि रसायनों के सुरक्षित, विवेकपूर्ण और अनुशंसित उपयोग, जैव विविधता संरक्षण, परागणकर्ता जीवों की सुरक्षा, कृषि अपशिष्ट प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के विषय में जागरूकता फैलाकर वह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी योगदान देता है। प्रभावी कृषि मित्र वही है, जो स्थानीय भाषा एवं सामाजिक परिस्थितियों को समझते हुए किसानों के साथ विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित करे, उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुने, वैज्ञानिक जानकारी को सरल एवं व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करे और आवश्यकतानुसार विशेषज्ञ सहायता उपलब्ध कराए। इसके लिए कृषि मित्रों का नियमित क्षमता निर्माण, तकनीकी प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता, संचार कौशल विकास तथा कृषि अनुसंधान की नवीनतम उपलब्धियों से परिचित रहना आवश्यक है। उनकी कार्यक्षमता का आकलन केवल किसानों तक पहुँचाई गई सूचनाओं की संख्या से नहीं, बल्कि तकनीकी अंगीकरण, उत्पादन लागत में कमी, संसाधन उपयोग दक्षता, फसल उत्पादकता, कृषक आय, पर्यावरणीय स्थिरता तथा किसानों की समस्या समाधान क्षमता में हुए वास्तविक सुधार के आधार पर किया जाना चाहिए। इस प्रकार, कृषि मित्र ग्रामीण भारत में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार, कृषि नवाचारों के स्थानीयकरण, किसान सशक्तीकरण और टिकाऊ कृषि विकास का एक प्रभावशाली माध्यम बन सकता है। वह प्रयोगशाला में विकसित ज्ञान को खेतों की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ते हुए कृषि अनुसंधान और कृषक समुदाय के बीच जीवंत संवाद स्थापित करता है। वास्तव में, कृषि मित्र केवल कृषि जानकारी पहुँचाने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि गाँव की प्रगति का वैज्ञानिक दूत है, जो ज्ञान, तकनीक, विश्वास और नवाचार के समन्वय से किसानों को अधिक उत्पादक, लाभकारी, आत्मनिर्भर तथा जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील कृषि व्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

कृषि सेवाओं का विस्तार

डिजिटल कृषि मोबाइल ऐप्स (जैसे किसान सुविधा, मृदापुरुष, ई-नाम)। फसल सलाह एसएमएस, कृषि कॉल सेंटर (केसीसी- 1800-180-1551)। ड्रोन आधारित फसल निगरानी और कीटनाशक छिड़काव। किसान उत्पादक संगठन के माध्यम से सेवा वितरण। कृषि सेवाओं का विस्तार आधुनिक कृषि विकास की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत वैज्ञानिक तकनीकों, गुणवत्तापूर्ण कृषि निवेशों, तकनीकी परामर्श एवं वित्तीय सहायता, बाजार सूचनाओं तथा डिजिटल सुविधाओं को किसानों तक सुलभ बनाया जाता है। कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विभागों, कृषि मित्रों, किसान उत्पादक संगठनों और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसानों को मृदा परीक्षण, उन्नत बीज, संतुलित पोषण प्रबंधन, सिंचाई तकनीक, कीट एवं रोग नियंत्रण, मौसम पूर्वानुमान तथा फसल विपणन संबंधी सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। मोबाइल एप्लिकेशन, ऑनलाइन परामर्श और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ कृषि सेवाओं की पहुँच एवं समयबद्धता एवं प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक हैं। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों, महिलाओं और ग्रामीण युवाओं तक इन सेवाओं की समान पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि कृषि उत्पादकता, किसानों की आय एवं संसाधन उपयोग दक्षता तथा टिकाऊ कृषि विकास को प्रोत्साहित किया जा सके।

नवाचार और तकनीकी एकीकरण

वर्तमान कृषि परिदृश्य में नवाचार और तकनीकी एकीकरण कृषि उत्पादन प्रणालियों को अधिक दक्ष, लाभकारी, टिकाऊ तथा जलवायु-सहिष्णु बनाने के प्रमुख आधार हैं। बढ़ती जनसंख्या, कृषि योग्य भूमि पर बढ़ते दबाव, जल संसाधनों की कमी, मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न अनिश्चितताओं के कारण पारंपरिक कृषि पद्धतियों के साथ आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का समन्वित उपयोग समय की आवश्यकता बन गया है। इस संदर्भ में कृषि नवाचार का अर्थ केवल नई मशीनों अथवा उपकरणों को अपनाना नहीं है, बल्कि उत्पादन, संसाधन प्रबंधन, ज्ञान प्रसार, कृषि विपणन और मूल्य संवर्धन की संपूर्ण प्रक्रिया में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्थानीय अनुभव तथा उभरती तकनीकों का प्रभावी समावेशन करना है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, मशीन लर्निंग, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली, ड्रोन तकनीक, उपग्रह आधारित निगरानी तथा बिग डेटा विश्लेषण जैसी उन्नत तकनीकें कृषि प्रबंधन को अधिक सटीक, समयबद्ध और डेटा-आधारित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सेंसर आधारित मृदा एवं नमी निगरानी प्रणालियों तथा स्वचालित सिंचाई तकनीकों के माध्यम से फसलों की वास्तविक जल आवश्यकताओं के अनुसार सिंचाई करके जल एवं ऊर्जा की बचत की जा सकती है, जबकि सटीक कृषि के अंतर्गत स्थान-विशिष्ट पोषक तत्व प्रबंधन, लक्षित उर्वरक प्रयोग तथा आवश्यकता-आधारित कीट एवं रोग नियंत्रण से कृषि निवेशों की दक्षता बढ़ाई जा सकती है। इसी प्रकार, ड्रोन आधारित फसल निगरानी, बहुवर्णीय चित्रण तथा रिमोट सेंसिंग तकनीकों का उपयोग फसल स्वास्थ्य का आकलन करने, पोषक तत्वों की संभावित कमी पहचानने, कीट एवं रोगों के प्रकोप की निगरानी करने तथा प्रभावित क्षेत्रों की समय पर पहचान करने में सहायक है। डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म, मोबाइल एप्लिकेशन, मौसम पूर्वानुमान सेवाएँ, किसान परामर्श प्रणालियाँ और ऑनलाइन बाजार नेटवर्क किसानों को वैज्ञानिक जानकारी, कृषि निवेशों, बाजार मूल्यों तथा सरकारी योजनाओं तक त्वरित पहुँच प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, जैव प्रौद्योगिकी, उन्नत बीज

प्रौद्योगिकी, जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक, संरक्षित खेती, हाइड्रोपोनिक्स, वर्टिकल फार्मिंग तथा कृषि अपशिष्ट के पुनर्चक्रण जैसी तकनीकों संसाधनों के कुशल उपयोग और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देती हैं। कृषि मित्र इस तकनीकी परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर सकते हैं, क्योंकि वे किसानों को नई तकनीकों की उपयोगिता समझाने, उनके व्यावहारिक प्रदर्शन आयोजित करने, डिजिटल उपकरणों के संचालन का प्रशिक्षण देने तथा स्थानीय कृषि परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त तकनीकों के चयन में सहायता प्रदान कर सकते हैं। हालांकि, तकनीकी एकीकरण की सफलता के लिए छोटे एवं सीमांत किसानों की आर्थिक क्षमता, डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट कनेक्टिविटी, उपकरणों की उपलब्धता, स्थानीय भाषा में सूचना, तकनीकी विश्वसनीयता और डेटा गोपनीयता जैसे पहलुओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, नई तकनीकों का चयन वैज्ञानिक परीक्षणों, लागत-लाभ विश्लेषण, स्थानीय अनुकूलता तथा पर्यावरणीय प्रभावों के मूल्यांकन के आधार पर किया जाना चाहिए, ताकि तकनीकी नवाचार केवल उत्पादन वृद्धि तक सीमित न रहें, बल्कि किसानों की शुद्ध आय, श्रम दक्षता, संसाधन संरक्षण और जोखिम प्रबंधन में भी वास्तविक सुधार ला सकें। कृषि अनुसंधान संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विभागों, कृषि-तकनीकी स्टार्टअप और किसान उत्पादक संगठनों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करके नवाचारों के विकास, परीक्षण, प्रसार और अंगीकरण की प्रक्रिया को गति दी जा सकती है। इस प्रकार, नवाचार और तकनीकी एकीकरण वैज्ञानिक ज्ञान, डिजिटल समाधान, स्थानीय अनुभव तथा किसान-केंद्रित कृषि विस्तार सेवाओं के समन्वय से ऐसी आधुनिक कृषि व्यवस्था के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जो उत्पादकता, आर्थिक लाभप्रदता, सामाजिक समावेशन और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए भविष्य की कृषि चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रस्तुत कर सके।

महिलाओं और युवाओं की भागीदारी

कृषि क्षेत्र में महिलाओं और युवाओं की सक्रिय भागीदारी आधुनिक, समावेशी, आत्मनिर्भर एवं टिकाऊ कृषि व्यवस्था के निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय कृषि में महिलाएँ लंबे समय से बीज चयन, बुवाई, रोपाई, निराई-गुड़ाई, सिंचाई प्रबंधन, फसल कटाई, मड़ाई, भंडारण, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण तथा कृषि उत्पादों के विपणन जैसे विभिन्न कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देती रही हैं। इसके बावजूद कृषि संबंधी निर्णय लेने, भूमि स्वामित्व, संस्थागत ऋण, उन्नत तकनीकों तक पहुँच, कृषि प्रशिक्षण तथा बाजार आधारित अवसरों में उनकी भागीदारी अनेक स्थानों पर सीमित बनी हुई है। वर्तमान समय में कृषि के आधुनिकीकरण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढीकरण के लिए महिलाओं को केवल कृषि श्रमिक के रूप में देखने के बजाय उन्हें कुशल कृषि प्रबंधक, नवप्रवर्तक, उद्यमी तथा निर्णयकर्ता के रूप में सशक्त बनाना आवश्यक है। कृषि विस्तार सेवाओं, किसान उत्पादक संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, महिला किसान उत्पादक कंपनियों तथा सहकारी संस्थाओं के माध्यम से महिलाओं को संगठित करके उनकी तकनीकी दक्षता, आर्थिक स्वतंत्रता और नेतृत्व क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अंतर्गत जैविक खेती, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जल संरक्षण, पोषक तत्व प्रबंधन, एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन, बीज उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, बागवानी, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती तथा कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन जैसे क्षेत्रों में महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, कृषि यंत्रीकरण को महिलाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करना, हल्के एवं सुरक्षित कृषि उपकरण उपलब्ध कराना, डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित करना तथा कृषि संबंधी योजनाओं, बीमा, ऋण एवं बाजार सूचनाओं तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। इससे महिलाओं के कार्यभार में कमी आएगी, श्रम उत्पादकता में वृद्धि होगी और कृषि परिवारों की आय तथा पोषण सुरक्षा को बेहतर बनाने में सहायता मिलेगी।

इसी प्रकार, युवा वर्ग भारतीय कृषि को पारंपरिक उत्पादन प्रणाली से आधुनिक, तकनीक-आधारित, उद्यमशील एवं बाजारोन्मुखी व्यवस्था में परिवर्तित करने की अपार क्षमता रखता है। ग्रामीण युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, डिजिटल तकनीकों को अपनाने की क्षमता, नवाचार के प्रति रुचि तथा उद्यम स्थापित करने की संभावनाएँ कृषि विकास के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती हैं। वर्तमान में कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ड्रोन तकनीक, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली, सटीक कृषि, स्मार्ट सिंचाई, मौसम पूर्वानुमान आधारित कृषि सलाह तथा डिजिटल विपणन जैसी तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। युवा इन तकनीकों को अपनाकर फसल स्वास्थ्य की निगरानी, मृदा एवं जल संसाधनों के कुशल उपयोग, कीट एवं रोगों की समय पर पहचान, उर्वरकों और कीटनाशकों के विवेकपूर्ण प्रयोग तथा उत्पादन लागत में कमी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही, कृषि स्टार्टअप, एग्रीटेक सेवाएँ, कस्टम हायरिंग सेंटर, ड्रोन आधारित कृषि सेवाएँ, मृदा परीक्षण, पौधशाला प्रबंधन, संरक्षित खेती, हाइड्रोपोनिक्स, एक्वापोनिक्स, जैव उर्वरक उत्पादन, जैविक निवेशों का निर्माण, कृषि अपशिष्ट प्रबंधन, खाद्य प्रसंस्करण, शीत शृंखला, भंडारण एवं ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में युवाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं। कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, ग्रामीण आजीविका मिशनों तथा कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण, उद्यम विकास संबंधी मार्गदर्शन, व्यवसाय योजना निर्माण, वित्तीय प्रबंधन और विपणन कौशल प्रदान किए जाने चाहिए। कृषि उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक ऋण, उपयुक्त वित्तीय सहायता, इनक्यूबेशन सुविधाएँ, तकनीकी परामर्श और बाजार संपर्क उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। इससे युवाओं को कृषि में सम्मानजनक आजीविका प्राप्त करने के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और पलायन में कमी लाने में सहायता मिलेगी।

महिलाओं और युवाओं की संयुक्त भागीदारी कृषि नवाचार, ज्ञान हस्तांतरण तथा ग्रामीण विकास को अधिक प्रभावी बना सकती है। जहाँ महिलाओं का स्थानीय कृषि परिस्थितियों, पारंपरिक ज्ञान, बीज संरक्षण, जैव विविधता, खाद्य सुरक्षा और घरेलू संसाधन प्रबंधन में अनुभव महत्वपूर्ण है, वहीं युवाओं की डिजिटल दक्षता, वैज्ञानिक जानकारी, उद्यमशीलता और बाजार की बदलती आवश्यकताओं को समझने की क्षमता इन अनुभवों को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़ सकती है। उदाहरण के लिए, महिला स्वयं सहायता समूहों और युवा कृषि उद्यमियों के बीच सहयोग स्थापित करके स्थानीय कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण, ब्रांडिंग, पैकेजिंग, गुणवत्ता नियंत्रण तथा ऑनलाइन विपणन किया जा सकता है।

इसी प्रकार, महिलाएँ और युवा मिलकर सामुदायिक बीज बैंक, जैविक खाद उत्पादन इकाइयाँ, पोषण वाटिकाएँ, मशरूम उत्पादन केंद्र, लघु कृषि प्रसंस्करण इकाइयाँ तथा कृषि अपशिष्ट से जैविक उत्पाद तैयार करने वाले उद्यम स्थापित कर सकते हैं। ऐसे सहयोगात्मक प्रयासों से स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग, कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन, ग्रामीण आय में वृद्धि तथा टिकाऊ आजीविका के अवसर विकसित किए जा सकते हैं। इसके लिए कृषि विस्तार प्रणाली को केवल तकनीकी जानकारी प्रदान करने तक सीमित न रखकर उसे सहभागी, आवश्यकता-आधारित, लैंगिक संवेदनशील और उद्यमोन्मुखी बनाना आवश्यक है। ग्राम स्तर पर महिला एवं युवा किसान समूहों का गठन, नियमित प्रशिक्षण, किसान-वैज्ञानिक संवाद, सफल उद्यमियों के अनुभवों का आदान-प्रदान, प्रदर्शन इकाइयों की स्थापना तथा डिजिटल कृषि परामर्श सेवाओं का विस्तार इस दिशा में प्रभावी कदम हो सकते हैं।

निष्कर्ष

कृषि मित्र और कृषि सेवाएं मिलकर भारतीय कृषि को एक नए युग में ले जा रही हैं, जहाँ किसानों को समय पर जानकारी, संसाधन, और मार्गदर्शन मिल रहा है। भविष्य में यदि इन सेवाओं को और अधिक संगठित, प्रशिक्षित और तकनीक-सम्मत किया जाए, तो भारत में स्मार्ट कृषि की कल्पना शीघ्र ही साकार हो सकती है। नवाचार ही अब खेती का भविष्य है, और कृषि मित्र उसका आधार हैं।